४७२५

तित्थयर

जैन भवन

वर्ष : २४ अंक : ३

जून २०००

ज्ञानी होने का सार यह है कि वह किसी भी प्राणी की हिंसा न करे।

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Groundnut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant
Post Box No. 5
Lucknow Road
Sitapur - 261001 (U.P.)
Ph: 42017/42397/42073
(05862)
Gram - Sethia - Sitapur
Fax : 42790 (05862)

Registered Office
143, Cotton Street
Cal-700 007
Ph: 2384329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office
2, India Exchange Place
Calcutta - 700 001
Ph: 2201001/9146/5055
Telex : 217149 SOIN IN
FAX : 2200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

वर्ष - २४ अंक - ३, जून २०००

॥ जैन भवन ॥

संपादन

लता बोथरा

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये पता - Editor : **Titthayara,** P-25, Kalakar Street, Calcutta-700 007

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें –
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Calcutta-700 007
Subscription for one year : Rs. 55.00, US$ 20.00,
for three year : Rs. 160.00, US $ 60.00,
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from
P-25, Kalakar Street, Calcutta-700 007 Phone: 238 2655 and Printed by her
at Arunima Printing Works, 81, Simla Street
Calcutta-700 006 Phone: 241 1006

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	लेख	लेखक	पृ. सं
१.	श्रमण भगवान महावीर -	श्रीमती लता बोथरा	९९
२.	रुद्रपल्लीय गच्छ के इतिहास पर संक्षिप्त प्रकाश -	डॉ० शिव प्रसाद सिंह	१०९
३.	सराक जाति का संक्षिप्त इतिहास-	श्री अमरेन्द्र कुमार सराक	११८
४.	मलयासुन्दरी		१२५

आवरण चित्र–**श्री अष्टापद (कैलाश)**

Composed by :
Anupriya Printers, 6A, Baroda Thakur Lane, Calcutta-700 007, Ph. 232 6083

श्रमण भगवान महावीर

पूर्वानुवृत्ति

सभी तीर्थंकरों में अन्तिम २४वें तीर्थंकर श्रमण भगवान महावीर अन्तिम होने के कारण हमारे सबसे निकटस्थ रहे हैं अतः आज जो दर्शन हमारे पास है वो उन्हीं के उपदेशों का संकलन है। उनके जीवन के प्रारम्भिक ३० वर्षों के विषय में यद्यपि विस्तृत विवरण नहीं मिलता फिर भी उपलब्ध सूत्रों के आधार पर ये निश्चित है कि भगवान महावीर का बचपन राजकुमार होने के कारण सुखी और ऐश्वर्य पूर्वक था। उनकी बाल्यावस्था में आमलकी क्रीड़ा का एक आख्यान मिलता है जिसमें खेलते हुए उन्होंने बिना भयभीत हुए एक भयंकर सर्प को पकड़ कर दूर फेंक दिया था। इसी वीरता के कारण देव ने उन्हें वीर की उपाधि दी थी। आमलकी क्रीड़ा का वर्णन मथुरा शिल्प में भी उपलब्ध है। महावीर के अतिरिक्त वर्द्धमान के सन्मति, वीर, अतिवीर नाम भी मिलते हैं। परम्परानुसार तीर्थंकर स्वतः अलौकिक ज्ञान और विद्याओं के प्रकाण्ड विद्वान होते हैं और उन्हें किसी बाह्य ज्ञान प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं होती। भगवान महावीर एक दिन के लिये ही पाठशाला जाते हैं और इन्द्र के व्याकरण सम्बन्धी प्रश्नों का समाधान कर अपनी ज्ञान गरिमा का परिचय देते हैं। कलिकाल सर्वज्ञ हेमचन्द्राचार्य के त्रिशष्टिशलाका पुरुष चरित्र में भगवान की युवावस्था का बहुत ही सुन्दर वर्णन मिलता है। आवश्यक सूत्र के अनुसार भगवान की ऊँचाई सात हाथ की तथा आकार उचित और श्रेष्ठ माप से युक्त अत्यन्त सुन्दर था।

श्रमण भगवान महावीर गृहस्थ धर्म में प्रवेश करने से पूर्व भी अनुत्तर, आभोगिक, अप्रतिपाति ज्ञान और दर्शन के धारक थे। उनके विवाह के विषय में भी दो मान्यताएं प्रचलित हैं श्वेताम्बर परम्परा के अनुसार युवा होने पर उनका विवाह सामन्त समरवीर की पुत्री यशोदा से हुआ था जिससे उनके प्रियदर्शना नाम की पुत्री थी जिसका विवाह

जमाली से हुआ तथा इन दोनों ने भगवान से दीक्षा ली थी। दिगम्बर परम्परा भगवान महावीर को अविवाहित मानती है। इसका कारण आवश्यक नियुक्ति में जिन पांच तीर्थंकरों को कुमार प्रवजित कहा है उनमें महावीर भी एक हैं। कुछ विद्वानों के अनुसार कुमार प्रवजित का अर्थ राजपद नहीं पाये हुए हैं लेकिन अन्य विद्वान इसका अर्थ कुमारावस्था में दीक्षा लेने के सन्दर्भ में मानते हैं। फिर भी इतना निश्चित है कि जब वे २८ वर्ष के हुए तो माता पिता का देहान्त हो गया तत्पश्चात् उन्होंने अपने बड़े भाई नन्दीवर्धन से दीक्षा लेने की आज्ञा मांगी इस पर नन्दीवर्धन ने कहा कि अभी तो माता पिता के वियोग का दुःख दूर नहीं हुआ और तुम भी छोड़ कर जाने की बात करने लगे। अभी कुछ समय तक ठहरो। वर्द्धमान ने बड़े भाई की बात स्वीकार कर दो वर्ष बाद दीक्षा लेने का निर्णय किया तथा सांसारिक रहते हुए भी त्यागी संयमी जीवन बिताने लगे। दो वर्ष पश्चात् अभिनिष्क्रमण का निंश्चय करते ही देवतागण उपस्थित होकर उनके संकलन का अनुमोदन करते हुए बोले ' हे जगत् के स्वामी अब आप जल्दी धर्मतीर्थ का प्रवर्तन कीजिये जिससे सब जीवों का सुख एवं कल्याण हो।'

अभिनिष्क्रमण का समय देख कर रजत का त्याग कर सुवर्ण का त्याग कर, धन का त्याग कर, राज्य का त्याग कर , इसी प्रकार सेना, वाहन, कोष, पुर का त्याग कर, अन्तःपुर का त्याग कर, जनपद का त्याग कर, विपुल धन, कनक, रत्न, मणि, मोती, शंख, शिला, माणिक आदि सारभूत समृद्धि का त्याग कर उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में चन्द्र के योग में विजयनामक मुहूर्त में दिन के चौथे प्रहर में चन्द्रप्रभा नामक शिविका (पालकी) में बैठे। शिविका के पीछे हजारों लोग भगवान का अभिनन्दन और स्तुति करते हुए इस प्रकार कह रहे थे कि हे नन्द तुम्हारी जय हो, हे भद्र तुम्हारी जय हो। -कल्पसूत्र ११२

श्रमण भगवान महावीर हजारों नेत्रों से देखे जाते हुए हजारों मुखों से प्रकाशित होते हुए, हजारों हृदयों से प्रशंसित होते हुए—— अपने दाहिने हाथ से हजारों नर नारियों के नमस्कार को स्वीकार करते हुए——कुण्डपुर नगर के बीचों बीच होकर निकलकर ज्ञात खण्डवन में श्रेष्ठ अशोक वृक्ष के नीचे आते हैं। शिविका से उतरते हैं ——आभरणादि

उतार कर स्वयमेव पंचमुष्ठि लोच करते हैं, एक देव दुष्य वस्त्र को धारण कर, सिद्धों को नमस्कार करके, मेरे लिये समस्त पाप कर्म अकरणीय है। मैं जीवन पर्यंत सर्व सावद्य योग का प्रत्याख्यान करता हूँ। इस प्रकार प्रतिज्ञा कर प्रव्रज्या ग्रहण करते हैं। आव० गाथा १०६

प्रव्रज्या ग्रहण करते ही भगवान को मन पर्याय ज्ञान उत्पन्न होता है (आया० श्रु० २ अ १५ पृ २३६)

साधारणतया तपस्वी जीवन की दिनचर्या अत्यन्त कठिन होती है और वो भी एक जैन मुनि की। लेकिन वर्धमान की तपस्या सबसे ही अलग थी। उनकी तपस्या के विषय में आवश्यक निर्युक्ति की एक गाथा में सुधर्मा स्वामी जम्बू स्वामी को भगवान महावीर की तपस्या का वृत्तान्त दे रहे हैं। 'जिस प्रकार स्वयंभू सागर सब सागरों से गहरा होता है गन्ने का रस सभी रसों से मीठा होता है उसी प्रकार सभी तपों में भगवान महावीर का तप सर्व श्रेष्ठ है।' इस कथन में कोई भी अतिशयोक्ति नहीं है क्यों कि अपने छद्मस्थ जीवन के १२ वर्षों ६ महिने और १५ दिनों में उन्होंने सिर्फ ३५० दिन ही भोजन किया तथा सिर्फ एक मुहूर्त के लिये ही सोये।

आचारंग में भगवान महावीर के साधुजीवन के विषय में काफी विवरण प्राप्त होता है।

श्वेताम्बर मान्यतानुसार दीक्षा के समय भगवान महावीर ने सिर्फ एक वस्त्र रख कर सभी दान कर दिये थे । विचरण करते समय एक ब्राह्मण ने उनसे याचना की। अतः उन्होंने उस वस्त्र के दो टुकड़े कर उन्हें आधा दे दिया। १३ महीने पश्चात् शेष आधा वस्त्र भी गिर गया। दिगम्बर मान्यतानुसार महावीर प्रारम्भ से दिगम्बर रूप में विचरण करते थे। उन्होंने परिषहों को जीता, भूख को जीता, लज्जा संकोच सभी को जीता, साधना काल के समय में उन्होंने पंच महाव्रतों सत्य, अहिंसा, अचौर्य, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य के कठोर पालन के साथ-साथ शारीरिक और मानसिक उपसर्गों को समता, धैर्य और शान्ति के साथ सहा।

भगवान के तपस्वी जीवन का वृत्तान्त

प्रथम वर्ष - दीक्षा उपरान्त ज्ञातखण्ड से विहार कर एक मुहूर्त शेष रहते भगवान कुमारिग्राम पहुँचे तथा कायोत्सर्ग में स्थिर हो गये।

संध्या के समय एक ग्वाला बैलों के साथ आया और बैलों को वहीं छोड़ कर चला गया। जब वह वापिस आया तो ध्यान में स्थित भगवान से पूछा कि देवार्य क्या आप जानते हैं कि यहाँ से बैल कहाँ गये हैं। जब महावीर से कोई उत्तर नहीं मिला तो ग्वाला उन्हें अन्यत्र ढूंढ़ने गया परन्तु उसे बैल नहीं मिले। सब जगह खोज कर जब वह लौटा तो उसे भगवान के निकट ही बैल बैठे मिले। यह देख वह क्रोधित होकर भगवान से बोला कि तुमने जानबूझ कर बैलों को छिपा कर मुझे हैरान किया है और हाथ में रास लेकर वर्द्धमान को मारने के लिये दौड़ा। उसी समय इन्द्र ने प्रकट होकर उससे कहा ये राजा सिद्धार्थ के पुत्र हैं जिन्होंने दीक्षा ली है। तत्पश्चात् भगवान को वंदन कर बोले भगवन् बारहवर्षों तक आपको विविध उपसर्ग होने वाले हैं अतः आज्ञा दीजिये तब तक के लिये मैं आपकी सेवा में रहूं और कष्टों का निवारण करता रहूं।

भगवान ने कहा - ऐसा कभी नहीं हुआ और न होगा। क्योंकि केवलज्ञान अपने उद्यम, श्रम, बल और वीर्य से प्राप्त किया जाता है, किसी के सहारे नहीं या सहायता द्वारा नहीं। अपने कर्मों को स्वयं ही भोगना तथा क्षय करना होता है। दूसरे दिन कुमारिग्राम से कोल्लाग सन्निवेश में गये वहाँ से मोराक सन्निवेश की तरफ प्रयाण किया। वहाँ का कुलपति सिद्धार्थ राजा का मित्र था तथा उसने महावीर से वर्षावास वहीं पर बिताने का आग्रह किया। कुलपति की प्रार्थना स्वीकार कर वर्षा ऋतु के समय वहीं पर कुलपति के दिये झोपड़े में रहने लगे। कुछ समय बाद आश्रम वासियों तथा झोपड़े के मालिक के व्यवहार से महावीर ने सोचा कि मेरा इस स्थान पर रहना इन लोगों के लिये अप्रीतिकर होगा अतः वर्षा काल के १५ दिन व्यतीत होने पर भी उन्होंने अस्थिकग्राम की ओर प्रयाण किया तथा उन्होंने निम्नलिखित अभिग्रह लिये

(१) अब से अप्रीतिकर स्थान में नहीं रहूँगा। (जहां किसी को भी उनके कारण असुविधा लगे ऐसे स्थान में नहीं रहेगें) (२) नित्य ध्यान में लीन रहूँगा। (३) नित्य मौन रहूँगा। (४) हाथ में भोजन करूँगा। (५) गृहस्थ का विनय नहीं करूँगा।

साधना काल के दूसरे वर्ष में मोराक सन्निवेश में कुछ समय ठहरे तत्पश्चात् दक्षिण वाचाला से उत्तर वाचाला को जाते हुए इनका आधा

देवदुष्य वस्त्र भी सुवर्ण बालुका के तट पर गिर गया। भगवान उसे वहीं छोड़ आगे बढ़ गये। उत्तरवाचाला जाते समय रास्ते में से जब वो विषम मार्ग से जा रहे थे तो ग्रामवासियों ने उन्हें उस मार्ग से जाने से रोका और कहा कि यह मार्ग निरापद नहीं है, इसमें एक भयंकर दृष्टिविष सर्प है अतः आप बाहर के मार्ग से जाएँ। भगवान महावीर ने उनकी बात पर ध्यान नहीं दिया और वे उसी विषम मार्ग पर चलते हुए सर्प के बिल के पास यक्ष के देवालय में जाकर ध्यानारूढ़ हो गये। सर्प ने जब उन्हें देखा तो अपनी विषमय दृष्टि उन पर डाली पर कोई प्रभाव नहीं होता देख क्रोधित हो पांव के अंगूठे में काट कर दूर हट कर देखने लगा। लेकिन भगवान को ध्यान में स्थिर देख उसने फिर दूसरी तथा तीसरी बार प्रहार किया परन्तु फिर भी कोई प्रभाव नहीं देख उसे निश्चय हो गया कि ये साधारण मनुष्य नहीं हैं उनकी तरफ देखने से शान्ति और क्षमा की मूर्ति प्रतीत होने लगे तथा ध्यान समाप्त होने पर महावीर से प्रतिबोध पाकर जाति स्मरण ज्ञान प्राप्त कर १५ दिन अनशन के उपरान्त उसने देह त्याग की।

अस्थिक ग्राम में अपनी क्षमाशीलता और करूणा से शूलपाणी व्यंतर देव का उपसर्ग सहा तथा एक मुहूर्त भर निद्रा ली जिसमें उन्होंने निम्नलिखित दस स्वप्न देखे।

१. ताल पिशाच को स्वयं अपने हाथ से गिराना।
२. श्वेत पुस्कोकिल की सेवा में उपस्थित होना।
३. विचित्र वर्णवाल पुस्कोकिल का सामने दिखायी देना।
४. सुगन्धित दो पुष्पमालाएँ दिखायी देना।
५. श्वेत गौ समुदाय दिखायी देना।
६. विकसित पद्म सरोवर का दर्शन।
७. स्वयं को महासमुद्र पार करते देखना।
८. दिनकर किरणों को फैलते देखना।
९. अपनी आंखों से मानुषोत्तर पर्वत को वोष्ठित करते हुये देखना।
१०. स्वयं को मेरु पर्वत पर चढ़ते देखना।

अस्थिग्राम में उत्पल नामक निमित्तज्ञानी प्रातः भगवान के दर्शन करने आया तथा उसने महावीर के स्वप्नों का फल क्रमशः इस प्रकार बताया।

१. आप मोहनीय कर्म का विनाश करेंगे।
२. आपको शुक्ल ध्यान की प्राप्ति होगी।
३. आप द्वादशांग श्रुत की प्ररुपणा करेंगे।
४. चतुर्थ स्वप्न का फल उत्पल नहीं बता सका।
५. चतुर्विध संघ की स्थापना करेंगे।
६. चारों प्रकार के देव आपकी सेवा में उपस्थित रहेंगे।
७. संसार सागर को पार करेंगे।
८. केवलज्ञान प्राप्त करेंगे।
९. आपका यश तीनों लोकों में व्याप्त होगा।
१०. सभी को धर्मोपदेश देंगे। चतुर्थ स्वप्न का फल जो निमितज्ञ नहीं बता पाया उसका फल भगवान महावीर ने स्वयं बताया कि वो दो प्रकार के धर्म का उपदेश देंगे। श्रावक धर्म और मुनि धर्म ।

तीसरा वर्षावास भगवान ने चम्पा नगरी में किया तथा दो - दो मास क्षपण की तपस्याएँ की।

चौथे वर्ष में चोराक सन्निवेश में गुप्तचर समझ कर आरक्षकों ने उन्हें पकड़ लिया। तब जयन्ती और सोमा नामक परिव्राजिकाओं ने आरक्षकों को भगवान महावीर का परिचय दे उन्हें छुड़वाया।

पांचवे वर्ष में भगवान राढ़ भूमि में विचरण किये जहां उन्होंने अनेक कष्ट सहन किये।

छठवें वर्ष में कूपिय सन्निवेश में राजपुरुषों द्वारा गुप्तचर समझकर पकड़े जाने पर विजया और प्रगल्भा नामक साध्वियों द्वारा उनका परिचय दिये जाने पर छोड़ दिया गया। शालिशीर्ष ग्राम में कटपूतना नामक व्यन्तरदेवी का उपसर्ग सहा। अन्त में महावीर की क्षमा शीलता देख कटपूतना ने अपनी हार मानी।

सातवें एवं आठवें वर्ष में भगवान ज्यादातर मगध प्रदेश में विचरे।

नवमें वर्ष में अभी मुझे बहुत कर्म खपाने हैं यह सोच भगवान ने राढ़ की वज्ज और सुम्ह भूमि में परिभ्रमण किया। इस क्षेत्र में भगवान को वर्षावास के लिये मकान तक नहीं मिला। अतः यह वर्षावास घूमते-फिरते ही पूरा किया। इसका वर्णन आचारंग में मिलता है। आचारंग सूत्र के नवें अध्ययन के तृतीय उद्देशक में लिखा है -

अह दुच्चरं लाढमचारी वज्जभूमियं सुब्भभूमियं पंतं।
सिज्ज सेविंसु, आसणगणि चेव पंताणि।।२।।

अर्थात् - जहाँ विचरना बहुत ही कठिन है ऐसे लाढ़ देश की वज्र भूमि-

और शुभ्र भूमि इन दोनों प्रदेशों में भगवान विचरे थे। वहाँ अनेक उपद्रवों से युक्त सूने घर आदि में भगवान ने विश्राम लिया था।

लाढेहिं तस्सुवसग्गा बहवे जाणवया लूसिंसु,
अह लूह दैसिए भत्ते, कुक्कुरा तत्थहिंसिंसुणि - वइंसु ।।३।।

लाढ़ देश में विचरते समय भगवान को बहुत उपसर्ग हुए थे। वहाँ के निवासी लोग भगवान को मारते थे, कुत्ते उन्हें काटते थे और उन पर टूट पड़ते थे।

णागो संगाम सीसे व पारए तत्थ से महावीरे
एवं वि तत्थ लाढेहिं अलद्धपुव्वो वि एगया गामो ।।८।।

जैसे हाथी संग्राम के अग्रभाग में जाकर शत्रुओं के प्रहार की परवाह न करता हुआ शत्रु सेना को जीतकर उसको पार कर जाता है। इसी तरह भगवान महावीर स्वामी ने भी लाढ़ देश के परिग्रहों को जीतकर उस देश को पार किया था। कभी ठहरने के लिए ग्राम भी नहीं मिलता था तब वे जंगल में वृक्षादि के नीचे ठहर जाते थे।

१०वें वर्ष में वैश्यायन ने गोशालक पर तेजोलेश्या छोड़ी परन्तु भगवान ने शीतलेश्या छोड़कर गोशालक को बचा लिया तब गोशालक ने भगवान से पूछा कि ये तेजोलेश्या कैसे प्रकट होती है। भगवान ने कहा जो मनुष्य ६ महीनों के साथ निरन्तर छट्टतप के साथ सूर्य के सामने दृष्टि रखकर खड़ा - खड़ा आतापना करता है और उबाले हुए मुट्ठी भर उरद और चुल्लूभर गर्म पानी से पारणा करता है उसे तेजोलेश्या उत्पन्न होती है। भगवान से यह सुन गोशालक ने कुछ समय बाद भगवान से अलग होकर तेजोलेश्या की शक्ति प्राप्त की तथा एक अलग आजीवक सम्प्रदाय का प्रमुख बन गया।

ग्यारहवें वर्ष में संगम देव द्वारा भगवान की परीक्षार्थ किये गये अनेक उपसर्गों को प्रभु ने समता पूर्वक सहन किया। पहले मोसलि फिर तोसलि में चोरी के सन्देह में पकड़ कर फाँसी दी गयी लेकिन फांसी का

फंदा बार - बार टूट जाने से तोसलीराजा ने उन्हें मुक्त कर दिया । १२वें वर्ष में भगवान कोसम्बी पधारे तथा उन्होंने घोर अभिग्रह किया। मुण्डित सिर, पावों में बेड़िया, तीन दिन की भूखी, रांधे हुये उरद के बाकले सूप के कोने में लेकर, भिक्षा का समय बीत जाने पर द्वार के बीच खड़ी हुई, दासत्व को प्राप्त कोई राजकुमारी अश्रुपूर्ण आंखों से भिक्षा देगी तभी लूंगा। इस प्रकार अभिग्रह लिये पांच महिने हो गये तथा छठे महिने के भी सिर्फ पांच दिन शेष रह गये थे तब कौसम्बी के सेठ धनवाह के घर पहुंचे तथा अपना अभिग्रह पूर्ण होता देख चन्दना के हाथ से भिक्षा ले पारणा किया। यही चन्दना भगवान महावीर संघ की प्रथम साध्वी हुईं।

तेरहवें वर्ष में जंभिय ग्राम से भगवान छम्माणि गये जहां एक ग्वाले ने अज्ञानवश भगवान के कानों में काठ के कीले ठोक दी वहां से भगवान मध्यमा पधारे तथा वहाँ खरक वैद्य द्वारा भगवान की अस्वीकृति होने पर भी कानों से कठ शलाकाएँ खींच निकलवायी गयी जिन्हें निकालते समय भगवान के मुख से असाध्य वेदनावश एक चीख निकल पड़ी। यह आश्चर्य जनक है कि भगवान महावीर की तपस्या का प्रारम्भ ग्वाले के उपसर्ग से हुआ और अन्त भी ग्वाले के उपसर्ग से हुआ ।

इस प्रकार विषम उपसर्गों और घोर परिषहों को सहते हुये ध्यान और साधना करते जंभीय ग्राम के समीप ऋजुवालिका नदी के उत्तर तट पर स्थित देवालय के समीप सालवृक्ष के नीचे उकडूं गोदुहासन में भगवान वैशाख शुक्ल दशमी के दिन चौथे प्रहर के समय केवलज्ञान प्राप्त कर सर्वज्ञ समदर्शी बने तथा सम्पूर्ण लोक, भूत, वर्तमान, भविष्य आपके ज्ञान में आलोकित हुये। केवल ज्ञान का सही रूप में यह अर्थ है कि जीवन और सृष्टि के सम्बन्ध में जो समस्याएं हैं जो जिज्ञासाएँ हैं तथा उनके सम्बन्ध में जो प्रश्न मन में उठते हैं उनका उन्हें संतोषप्रद समाधान मिल जाना।

इन १२ वर्षों में अनेक परिषहों को सहा अपनी आत्मा की मुक्ति के लिये बंधे कर्मों को क्षय किया तथा पूर्णता प्राप्त की। प्राप्ति की वो जन्म से ही वीतराग नहीं थे इन १२ वर्षों की साधना द्वारा उन्होंने वीतरागता प्राप्त की थी। उन्होंने स्वयं को पहिचान कर तथा अपने आचरण द्वारा अपनी आत्मा की मुक्ति का रास्ता खोजा और यही खोज

यह १२ वर्षों का उनका साधना काल थी जिसमें पहले बनो फिर बनाओ का सिद्धान्त निहित था।

भगवान महावीर की सर्वज्ञता के विषय में बौद्ध ग्रन्थ माज्झि मनिकाय भाग १ पृष्ठ ६२/६३ में लिखा है।

"निर्ग्रन्थ ज्ञात पुत्र सर्वज्ञ और सर्वदर्शी है, वे अशेष ज्ञान और दर्शन के ज्ञाता हैं। चलते, ठहरते, सोते, जागते समस्त अवस्थाओं में सदैव उनका ज्ञान और दर्शन उपस्थित रहता है।"

ऋग्वेद के मंडल २ अ० १ सूक्त ३ में भगवान महावीर की स्तुति मिलती है। "हे देवों के देव वर्द्धमान। आप महावीर हैं, व्यापक हैं। हम सम्पदाओं की प्राप्ति के लिये इस वेदी पर घृत से आपका आह्वान करते हैं।

इन १२ वर्षों में जो उपसर्ग और परिषह उन्होंने सहन किये उनका वर्णन सुनने से ही आदमी भयभीत हो जाता है उनके हृदय में शत्रुओं के लिये भी प्रेम व स्नेह भरा था। गौशालिक, चण्डकौशिक, ग्वाले के, शूलपाणि के तथा संगम देव द्वारा किये घोर उपसर्गों में भी वे धीर, गंभीर, प्रशांत मूर्ति बने रहे। ऐसे भगवान महावीर को वन्दन करते हुए हेमचन्द्राचार्य ने लिखा है। कि 'छः महिनों तक घोरातिघोर प्राणान्त कष्ट देने वाले संगम नामक दानव के श्रेय की करुणा से अश्रुधारा बहाने वाले हे योगी तेरे दया रूप महासागर को कैसे मापूँ। तुम्हारी इस कला के सामने मेरी काव्य कला क्या काम आ सकती है।' वे सिर्फ क्षमा में ही वीर नही अपितु दानवीर, दयावीर, शीलवीर, त्यागवीर, तपवीर, धीरवीर, कर्मवीर, ज्ञानवीर, और चारित्रवीर आदि सर्वगुणों में शिरोमणि थे इसी से उनका नाम वर्द्धमान से महावीर हुआ।

आचार्य जिनसेन के अनुसार केवलज्ञान प्राप्ति के ६५ दिनों के बाद भगवान महावीर ने देशना दी लेकिन श्वेताम्बर परम्परा के अनुसार आत्म कल्याण की उच्चतम् स्थिति को प्राप्त कर महावीर लोक कल्याण के लिये उस स्थान से रात्रि को ही प्रस्थान कर १२ योजन पार कर मध्यम पावा के महासेण नाम के उद्यान में पहुंचे जहां समवसरण में धर्म प्रवचन सुनने के इच्छुक राजा प्रजागण देव देवियाँ एकत्रित हुए। इस समवसरण में भगवान महावीर ने संस्कृत की बजाय सर्व साधारण की भाषा अर्द्धभागधी में एक पहर तक उपदेश दिया । जिसमें जीव, अजीव

तथा जीवन के सुखमय आदर्श प्राप्त करने के लिये गृहस्थों को अणुव्रत आदि बारह व्रतों और सम्यक्त्व धर्म के विषय में बताया। सम्पूर्ण जन समुदाय उनके पूर्ण ज्ञान से युक्त उपदेशों और वाणी की माधुर्यता से अभिभूत हो गया। सर्वत्र प्रशंसा होने लगी जिसे सोमिल की यज्ञशाला में आये हुये अतिथि विद्वानों ने भी सुना। इन अतिथि विद्वानों में इन्द्रभूति गौतम प्रकाण्ड वैदिक विद्वान थे। उन्होंने भी जब भगवान महावीर की सर्वज्ञता के विषय में सुना तो वो उनको परखने के लिये अपने ५०० शिष्यों के साथ भगवान के पास पहुंचे। महावीर के व्यक्तित्व तथा भामण्डल को देख अभिभूत हो गये। भगवान महावीर ने उनको देखकर उनका नाम लेकर पूछा - गौतम क्या तुम्हें आत्मा के अस्तित्व के सम्बन्ध में शंका है। इन्द्रभूति ने कहा - हाँ मुझे इस विषय में शंका है और इस शंका का आधार परस्परविरोधी वेद वाक्य हैं। क्योंकि वेदों में कहा है कि भूत समुदाय से चेतन पदार्थ उत्पन्न होता है और उसी में लीन हो जाता है। परलोक नहीं है। भूत समुदाय के अतिरिक्त पुरुष का कोई अस्तित्व नहीं है। तब भगवान ने कहा विज्ञानधन आदि पदों का अर्थ जैसा तुम समझते हो वैसा नहीं है। भूत समुदाय से उत्पन्न चेतन पिण्ड नहीं होकर विज्ञानधन का अर्थ विविध ज्ञान पर्यायों से है। आत्मा में प्रतिक्षण नवीन ज्ञान पर्यायों का आविर्भाव तथा पूर्वकालीन ज्ञान पर्यायों का तिरोभाव होता रहता है। अतः अन्यान्य प्रदार्थ विषयक ज्ञान के पर्याय में विज्ञानधन है जो भूतों से उत्पन्न होता है ये पृथ्वी आदि पंच भूत नहीं होकर जीव अजीव आदि सभी ज्ञेय (जानने योग्य) पदार्थ हैं।

क्रमशः

रूद्रपल्लीय गच्छ के इतिहास पर संक्षिप्त प्रकाश

– डॉ. शिवप्रसाद सिंह

इस प्रकार साहित्यिक साक्ष्यों द्वारा निर्मित पूर्वप्रदर्शित तालिका को अभिलेखीय साक्ष्यों द्वारा जो नूतन स्वरूप प्राप्त होता है वह निम्नानुसारः द्रष्टव्य तालिका क्रमांक ———२

तालिका -२

वर्धमानसूरि (प्रथम)
|
जिनेश्वरसूरि
|
अभयसूरि (प्रथम) नवांगी वृत्तिकार
|
जिनवल्लभसूरि
|
जिनशेखरसूरि (रुद्रपल्लीयगच्छ के आदिपुरुष)
|
पद्मचन्द्रसूरि
|
विजयचन्द्रसूरि
|
अभयदेवसूरि (द्वितीय) वि० सं० १२७८/ई० सं० १२२२ में जयन्तविजयकाव्य के रचनाकार
|
देवभद्रसूरि (वि० सं० १२९८ - १३०२) प्रतिमालेख

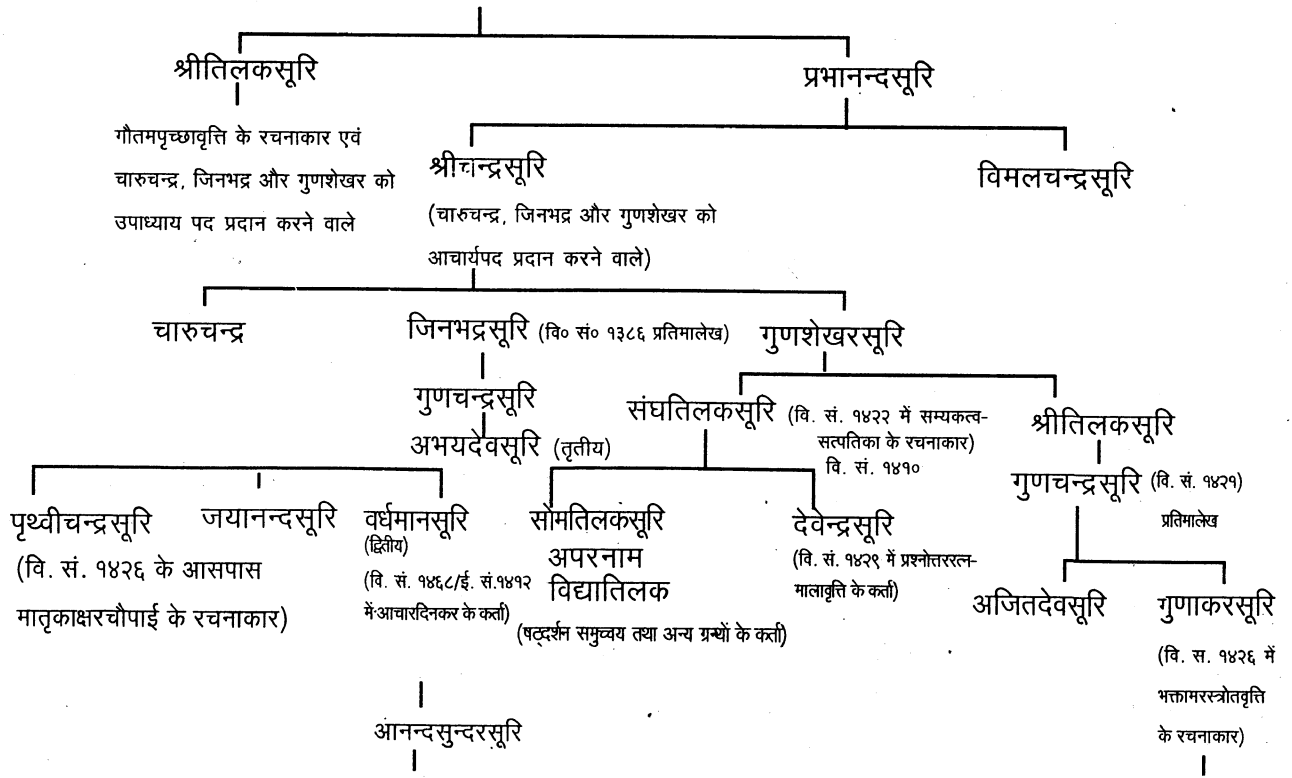
श्रीतिलकसूरि
प्रभानन्दसूरि
गौतमपृच्छावृत्ति के रचनाकार एवं
चारुचन्द्र, जिनभद्र और गुणशेखर को
उपाध्याय पद प्रदान करने वाले
श्रीचन्द्रसूरि
(चारुचन्द्र, जिनभद्र और गुणशेखर को
आचार्यपद प्रदान करने वाले)
विमलचन्द्रसूरि
चारुचन्द्र
जिनभद्रसूरि (वि० सं० १३८६ प्रतिमालेख)
गुणशेखरसूरि
गुणचन्द्रसूरि
अभयदेवसूरि (तृतीय)
संघतिलकसूरि (वि. सं. १४२२ में सम्यकत्व-
सप्तपतिका के रचनाकार)
वि. सं. १४१०
श्रीतिलकसूरि
गुणचन्द्रसूरि (वि. सं. १४२१)
प्रतिमालेख
पृथ्वीचन्द्रसूरि
(वि. सं. १४२६ के आसपास
मातृकाक्षरचौपाई के रचनाकार)
जयानन्दसूरि
वर्धमानसूरि
(द्वितीय)
(वि. सं. १४६८/ई. सं.१४१२
में आचारदिनकर के कर्ता)
सोमतिलकसूरि
अपरनाम
विद्यातिलक
(षड्दर्शन समुच्चय तथा अन्य ग्रन्थों के कर्ता)
देवेन्द्रसूरि
(वि. सं. १४२९ में प्रश्नोत्तररत्न-
मालावृत्ति के कर्ता)
अजितदेवसूरि
गुणाकरसूरि
(वि. स. १४२६ में
भक्तामरस्त्रोतवृत्ति
के रचनाकार)
आनन्दसुन्दरसूरि

आज्ञासुन्दरसूरि — वि. सं. १५६२/ई. सं. १५०६ में शीलवतीकथा के रचनाकार

देवरत्नसूरि — वि. सं. १५६९ के ह्रींकार यंत्र पर उत्कीर्ण लेख में उल्लिखित

चारित्ररजसूरि

द्वितीय वर्ग में उन प्रतिमालेखों को रखा जा सकता है जिनमें उल्लिखित मुनिजनों का केवल अभिलेखीय साक्ष्यों में ही उल्लेख मिलता है, किन्तु वहां उनकी गुरु - परम्परा के दो - एक नाम ज्ञात होने से कुछ छोटी - छोटी गुर्वावलियां संकलित की जा सकती हैं । जो निम्नानुसार हैं।

(अ)

जिनहंससूरि
जिनराजसूरि (वि. सं. १४२१)

जिनहंससुन्दरसूरि (वि. सं. १४९४)
जिनराजसूरि (वि. सं. १५०१-१५०६)
जिनोदयसूरि (वि. सं. १५२५)
देवसुन्दरसूरि (वि. सं. १५४२)

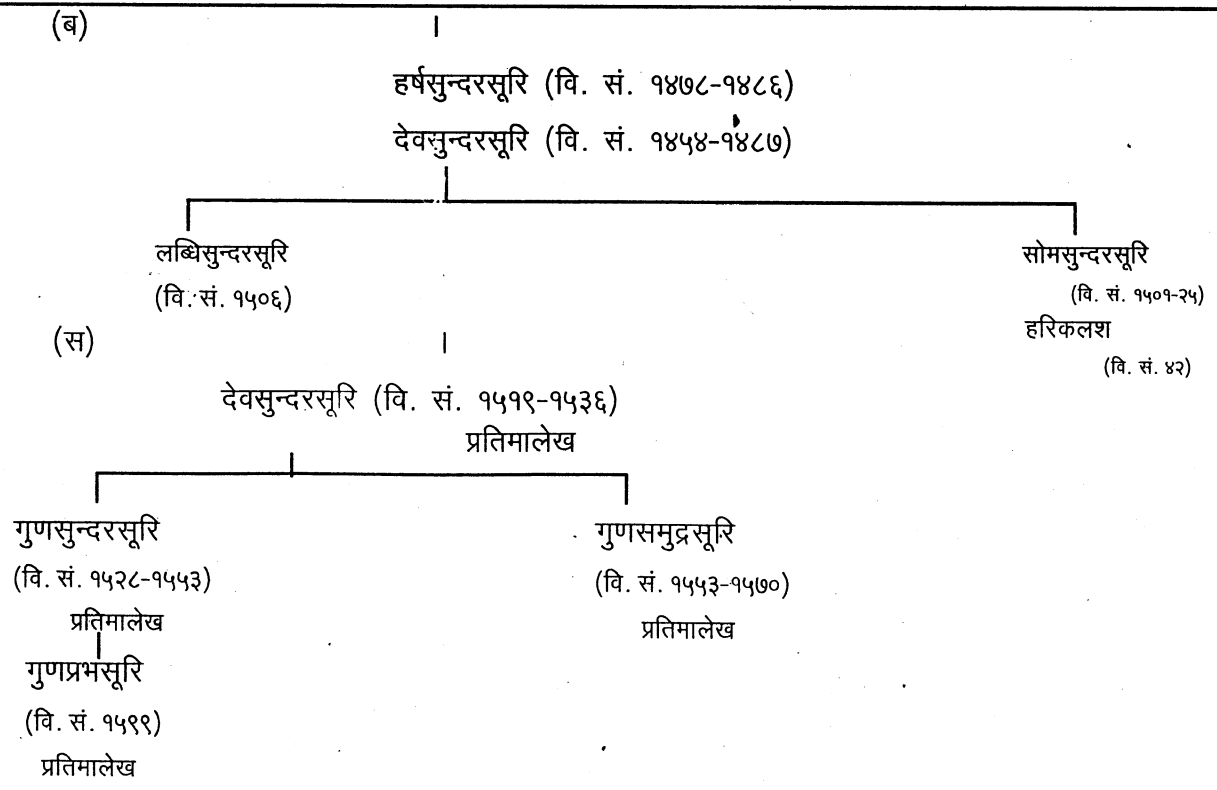
(ब)
हर्षसुन्दरसूरि (वि. सं. १४७८-१४८६)
देवसुन्दरसूरि (वि. सं. १४५४-१४८७)
लब्धिसुन्दरसूरि
(वि. सं. १५०६)
सोमसुन्दरसूरि
(वि. सं. १५०१-२५)
हरिकलश
(वि. सं. ४२)
(स)
देवसुन्दरसूरि (वि. सं. १५१९-१५३६)
प्रतिमालेख
गुणसुन्दरसूरि
(वि. सं. १५२८-१५५३)
प्रतिमालेख
गुणप्रभसूरि
(वि. सं. १५९९)
प्रतिमालेख
गुणसमुद्रसूरि
(वि. सं. १५५३-१५७०)
प्रतिमालेख

(द)

?

जिनदत्तसूरि

देवसुन्दरसूरि
(वि. सं. १५३८-१५५६)
प्रतिमालेख

(र)

?

आनन्दसुन्दरसूरि

देवसुन्दरसूरि

विवेकसुन्दरसूरि

हेमरत्नसूरि

सोमरत्नसूरि

लक्ष्मीरत्नसूरि

गुणरत्नसूरि

उक्त छोटी-छोटी पांच गुर्वावलियों (अ, व, स, द, और क) में से व और क में परस्पर समायोजन संभव हो सका है, और दोनों को संयुक्त रूप से निम्नानुसार रखा जा सकता है:

द्रष्टव्य - तालिका क्रमांक ———३

?

हर्षसुन्दरसूरि (वि. सं. १४७८-१४८६)

देवसुन्दरसूरि (वि. सं. १४५४-१४८७)

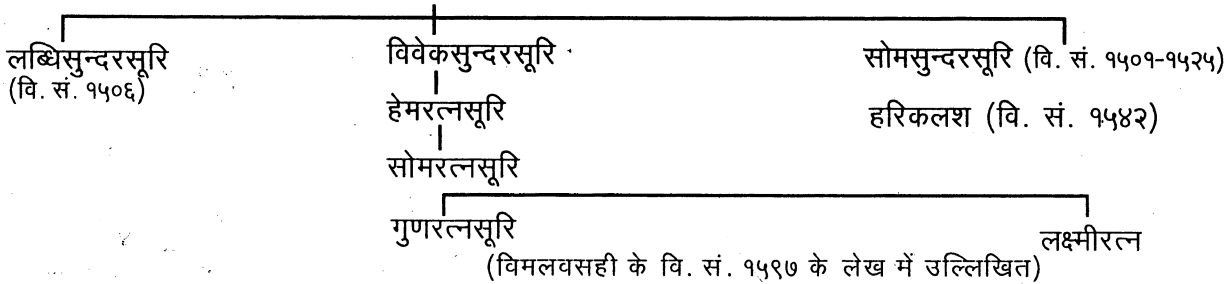

तृतीय वर्ग में उन लेखों को रखा जा सकता है जिनमें प्रतिमाप्रतिष्ठापक मुनि एवं गच्छ का तो नाम है किन्तु उनके गुरु का नहीं।

इनका विवरण इस प्रकार है:

वि. सं.	प्रतिष्ठापक मुनि का नाम
१५१०	हरिभद्रसूरि[१८]
१५२५,१५४५	हेमप्रभसूरि[१९]
१५५६	हर्षसुन्दरसूरि[२०]
१५५६	सर्वसुन्दरसूरि[२१]

जिनपंजरस्त्रोत[२२] के रचयिता कमलप्रभसूरि भी इसी गच्छ के थे। उनके गुरु का नाम देवप्रभसूरि था। यह बात उक्त कृति की प्रशस्ति से ज्ञात होती है। किन्तु यह कृति कब रची गयी, रचनाकार के गुरु देवप्रभसूरि किसके शिष्य थे! इस सम्बन्ध में न तो उक्त प्रशस्ति से और न ही किन्हीं अन्य साक्ष्यों से कोई जानकारी प्राप्त होती है। इस प्रकार यह प्रश्न अभी तो अनुत्तरित ही रह जाता है।

रुद्रपल्लीयगच्छ से सम्बद्ध उक्त अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर इस गच्छ के मुनिजनों के गुरु-परम्परा की कोई विस्तृत तालिका को संगठित कर पाना कठिन है, फिर भी इनसे यह स्पष्ट होता है कि श्वेताम्बर जैन समाज के एक बड़े वर्ग पर इस गच्छ के मुनिजनों का लगभग ३०० वर्षों तक प्रभाव रहा है। श्री अगरचन्द नाहटा २३ ने वि. सं. की १७वीं शती तक इस गच्छ का अस्तित्व बतलाया है। उसके बाद इस गच्छ से सम्बद्ध कोई सूचना प्राप्त नहीं होती, अतः यह माना जा सकता है कि रुद्रपल्लीयगच्छ का १७वीं शताब्दी के बाद स्वतंत्र अस्तित्व समाप्त हो गया होगा और इस गच्छ के अनुयायी साधु और श्रावक किन्हीं अन्य गच्छों विशेषकर खरतरगच्छ या उसकी किन्हीं शाखाओं में सम्मिलित हो गये होंगे।

संदर्भ

1. P. Peterson - A Fourth Report of Operation in Search of Sanskrit Mss in the Bombay circle 1886 - 1882 A. D.

Bombay is I. S. No - 1248, Pg 87 - 89.

2. A. P. Shah - Catalogue of Sanskrit and Prakrit Mss Muniraja Shree Punya Vijayajis Collection Vol I, D. Series No - 2, Ahmedabad 1963/ A. D. No - 3419 Pg - 197 - 198.

3. Muni Punya Vijaya -Ed. New Catalogue of Sanskrit and Prakrit Mss : Jesalmer Collection L. D. Series No. 36, Ahmedabad 1972 A. D. No-1798, P-325.

4. P. Peterson - Search of Sanskrit Mss Vol I, Bombay 18 A. D. No.

351. Pg 92 -94.

5. हीरालाल रसिकलाल कापड़िया - भक्तामर कल्याण मंदिर नमिऊणस्तोत्र त्रयम् मुम्बई १९३२ ईस्वी सन्, पृष्ठ - १२२. एवं

P. Peterson. Search of Sanskrit Mss Vol V Bombay 188 A. D. No -779, P. g

6. मोहनलाल दलीचंद देसाई - जैन गूर्जर कविओ भाग १, नवीन संस्करण सं पा. डा. जयन्त कोठारी, मुम्बई १९८६ ईस्वी. पृष्ठ ३६.

7. P. Peterson - Search of Sanskrit Mss Vol IV, Bombay - 188 A. D. No-1299, Pg 108-109.

8. यह ग्रन्थ खरतरगच्छ ग्रन्थमाला, लालबाग, मुम्बई से १९२२ ईस्वी में दो भागों में प्रकाशित हुआ है। ग्रन्थ के अन्त में ३२ श्लोकों की लम्बी प्रशस्ति है जिसमें ग्रन्थकार के गुरु - परम्परा तथा रचनाकाल आदि का निर्देश है।

9. जौहरीमल पारेख - संपा० जिनभद्रसूरिज्ञान भंडार जैसलमेर के हस्तलिखित ग्रन्थों का सूची पत्र द्वितीय खंड जिनदर्शन प्रतिष्ठान ग्रन्थ क्रमांक १, जोधपुर १९८८ ई० विभाग ४ - अ, क्रमांक ४१६, पृष्ठ २४० -२४१.

10. ओ० संवत् १२९६ वर्षे फागुण वदि ५ सौ कीरग्रामें ब्रह्मक्षत्रगोत्रोत्पन्नव्यव० मानूपुत्राभ्यां व्य० दोल्हणआल्हणाभ्यां स्वकारित श्रीमन्महावीरदेवचैत्ये।।

श्री महावीर जिनमूलबिंबं आत्मश्रेयो (र्थ) कारितं। प्रतिष्ठितं च श्री जिनवल्लभसूरि संतानीयरुद्रपल्लीयश्रीमदभयदेवसूरिशिष्यैः श्रीदेवभद्रसूरिभिः

G. Buhler- The Jaina Inscription in the temple of Baij Nath At Kiragrame Epigraphia Indica Vol I, Calcutta - 1892 A. D. P p 118 -119.

11. द्रष्टव्य - लेख क्रमांक २.

12. लेख क्रमांक ४.

13. लेख क्रमांक ७.

14. लेख क्रमांक ८.

15. मुनि कल्याण विजय - प्रबन्ध पारिजात जालोर १९६६ ई०, लेखांक १४, पृष्ठ ३८१.

16. शिव प्रसाद - "धर्मघोषगच्छ का संक्षिप्त इतिहास" श्रमण वर्ष ४१, अंक १ - ३, पृष्ठ ५१

17. द्रष्टव्य - लेख क्रमांक ४९.

18. लेख क्रमांक २३,२४,२५.

19. लेख क्रमांक ३४, ४४.

20. लेख क्रमांक ४६.

21. लेख क्रमांक ४८.

22. श्रीरुद्रपल्लीयवरेण्यगच्छे, देवप्रभाचार्यपदाब्जहंसः।
वादीन्द्रचूड़ामणि देव जैनो, जीयाद् गुरुः **श्रीकमलप्रभाख्यः**।।२५।।
नमस्कारस्वाध्याय -संपा. मुनि श्री धुरंधर विजयजी एवं जम्बूविजयजी, जैन साहित्य विकास मंडल, मुम्बई १९६२ ई. सं., पृष्ठ १८४-१८८.

23. **अगरचन्द नाहटा** - "जैन श्रमणों के गच्छों पर संक्षिप्त प्रकाश" यतीन्द्रसूरि अभिनन्दन ग्रन्थ आहोर १९५८ ई०, पृष्ठ १४५.

सराक जाति का संक्षिप्त इतिहास

श्री अमरेन्द्र कुमार सराक

'सराक' शब्द की उत्पत्ति

सराक जाति के इतिहास का ज्ञान प्राप्त करने के लिये हमें पहले सराक शब्द की उत्पत्ति के बारे में ज्ञान प्राप्त करना अत्यन्त आवश्यक है। उसी तरह सराक शब्द की उत्पत्ति का ज्ञान प्राप्त करने के लिये हमें पहले 'श्रावक' शब्द की उत्पत्ति के बारे में ज्ञान प्राप्त करना अनिवार्य हो जाता है क्योंकि श्रावक शब्द का ही अपभ्रंश रूप है सराक। श्रावक से सरावक, तथा सरावक का 'व' हट जाने के पश्चात् सराक हो गया। या भारत के पूर्वांचल में व शब्द का उच्चारण नहीं होता इसलिये श्रावक के जगह में लोग 'व' का उच्चारण नहीं कर सीधा श्राक तथा धीरे -. धीरे सराक कहने लगे।

अब श्रावक शब्द की उत्पत्ति के बारे में हमें तभी विस्तार से ज्ञान प्राप्त हो सकता है जब हम जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर तथा इस युग के प्रणेता श्री ऋषभ देव या आदिदेव के इतिहास पर नजर डालेंगे।

सभ्यता के क्रमबद्ध विकास के इतिहास से पूर्व के युग को प्रागऐतिहासिक युग कहा जाता है। उस काल में जो सभ्यता का विकास हुआ उसे आदिम सभ्यता कहा जाता है। उस सभ्यता के विकास का समय निर्धारण करना यद्यपि कठिन है तथापि विशेषज्ञगणों ने उस काल के इतिहास की एक रूपरेखा तैयार करने की चेष्टा की है जो पूर्णतः सत्य नहीं भी हो सकती है। मगर उससे एक साधारण इतिहास की रूप धारणा प्राप्त की जा सकती है।

सभ्यता के पहले चरण में मनुष्य और पशु में कोई अन्तर नहीं था। दोनों लगभग एक ही प्रकार का जीवन व्यतीत करते थे। फिर भगवान की कृपा से मनुष्यों के अन्दर विचार विवेचना की शक्ति की वृद्धि

दिनोंदिन होने लगी जिसके चलते आज मनुष्य ग्रह - उपग्रह में पहुंचने के करीब आ गया है। दूसरी तरफ पशु - पशु ही रह गया, जैसा आदिम युग में था, आज भी वैसा ही है।

जैन शास्त्रों के अनुसार सभ्यता के प्रथम चरण में मनुष्यों को भोजन की प्राप्ति कल्प वृक्ष से होती थी। कल्प वृक्ष के पास जाकर मांगने पर ही भोजन मिल जाता था जिससे मनुष्य अपनी भूख मिटाते थे तथा झरने का पानी पी कर अपनी प्यास बुझाते थे। अर्थात् लोग जंगल का फल, मूल आदि द्वारा ही अपने खाद्य की पूर्ति करते थे। ऐसे ही समय में एक हाथी का आविर्भाव हुआ। उस हाथी का नाम लोगों ने विमल वाहन रखा। उस हाथी तथा एक आदमी का आपसी प्रेम हो गया। वह आदमी उस हाथी की पीठ पर चढ़कर लोगों के बीच घूमा करता था तथा किसी भी प्रकार की विपत्ति में लोगों को सहायता करने के लिये हाजिर रहता था। इसलिये उस आदमी का नाम भी लोगों ने विमल वाहन रख दिया।

विमल वाहन साधारण मनुष्यों से बुद्धिमान था इसलिये किसी आदमी को जंगल में किसी प्रकार की समस्या या विपत्ति आने पर उसके समाधान हेतु तुरन्त विमलवाहन के पास पहुंच जाता था तथा विमल वाहन भी उन समस्याओं को हल करने में सहायता करता था। लोगों ने इसलिये उन्हें अपने कुल का रक्षक अर्थात् कुल का स्वामी समझकर उन्हें 'कुलकर' नाम से विभूषित किया। इस तरह से क्रमशः छः कुलकरों का आविर्भाव तथा मृत्यु के पश्चात् सातवें कुलकरके रूपमें नाभिराय का जन्म हुआ। नाभी की स्त्री थी मरुदेवी।

कुछ दिन पश्चात् नाभि तथा मरुदेवी के घर में एक दिव्य-कान्तिमान पुत्र और एक कन्या का जन्म हुआ। माता -पिता ने पुत्र का नाम ऋषभ तथा कन्या का नाम सुमंगला रखा। उस युगमें युगलिक प्रथा प्रचलित थी अर्थात अपने ही पुत्र कन्या की जोड़ी (युगलजोड़ी) स्वामी स्त्री के रूप में जीवन व्यतीत करते थे। मगर नाभिराय ने एक दिन जंगल में एक सुन्दरी कन्या को अकेले घूमते देखा जिसका कोई अभिभावक नहीं था। नाभिराय उस लड़की को घर पर ले आये एवं

उसका नाम सुनन्दा रखा। सुनन्दा की शादी भी नाभिराय ने अनुष्ठान पूर्वक ऋषभदेव के साथ कर दी। यही थी दुनिया की आनुष्ठानिक पूर्वक पहली शादी। सुमंगला के गर्भ से भरत नामक एक पुत्र एवं ब्राह्मी नामक एक कन्या का जन्म हुआ। जैन शास्त्र के अनुसार ऋषभ के पुत्र भरत के नामानुसार ही इस देश का नाम भारत पड़ा।

ऋषभ के जन्म के समय से ही लोगों को यह पता चल गया था कि ऋषभ कोई साधारण व्यक्ति नहीं है, इसलिये लोग उन्हें बचपन से ही 'ऋषभ देव' कहने लगे। साधारण लोगों को यह ज्ञान नहीं था कि ऋषभदेव ने ही पहले तीर्थंकर के रूप में जन्म ग्रहण किया है। मगर ऋषभ का जन्म होते ही इन्द्र महाराज का आसन हिल गया और उन्हें अवधिज्ञान द्वारा मालुम हो गया कि जम्बुद्वीप के भरत क्षेत्र में पहले तीर्थंकर का अविर्भाव हो गया है। तथा उनका जन्म महोत्सव मनाने के लिये हमें नाभिराय के घर जाना आवश्यक है। यह शास्त्र का नियम भी है कि किसी तीर्थंकर के जन्मोत्सव तथा दीक्षा के समय इन्द्र महाराज को आना पड़ता है। दीक्षा के समय इन्द्र महाराज देवदुष्य नामक जो वस्त्र प्रदान करते हैं उसी वस्त्र को पहन कर दीक्षोपरान्त तीर्थंकर भगवन्त साधारण जनता के बीच विचरण करते हैं। इन्द्र महाराज के भगवन्त के जन्मोत्सव में आगमन से लोग समझ गये थे कि इस लड़के ने अवश्य ही भगवान के रूप में जन्म ग्रहण किया है। महाराज इन्द्र द्वारा नाभि के वंश का नाम इक्ष्वाकू वंश रखा गया। यह नाम रखने के पीछे भी एक रोचक इतिहास है। - इन्द्र महाराज जब जन्म महोत्सव में आ रहे थे तब उन्होंने सोचा कि लड़के के लिये क्या ले जाऊँ। नजदीक एक ईख देखा और उसी को लेकर चले आये। ईख को लेकर इन्द्र महाराज को खड़ा देखकर भगवान ईखको लेने के लिये पलंग पर उछल - कूद करने लगे। ईख को देखकर हर्षित होने के कारण इन्द्र महाराज ने नाभि के वंश का नाम इक्ष्वाकू वंश रख दिया।

बचपन से ही ऋषभदेव सहानुभूतिशील थे। मनुष्यों का जीवन सुखमय बनाने के लिये सदा प्रयास करते थे। जंगल में घूम - घूम कर सभी की समस्याओं को देखते थे तथा उससे निपटने के लिये उपदेश

देते थे। आबादी बढ़ने के कारण जब जंगल के फल - मूल भोजन के लिये अपर्याप्त होने लगे तब ऋषभ देव मनुष्यों को कृषिकार्य सिखलाये, क्रमशः शिल्प कला आदि का ज्ञान दिया। इस तरह से पशुपालन, वस्त्र व्यवहार आदि सभी आवश्यकीय वस्तुओं के उपयोग का ज्ञान देकर जनता को सभ्यता की ओर अग्रसरित किया। अपने जीवन को सुखी बनाने के लिये अनुशासन सिखाया तथा अनुशासन बनाये रखने के लिये नियम कानून बनाये। इसलिये ऋषभदेव को शास्त्रों के नियम कानून का प्रणेता कहा गया है।

ऋषभदेव खुद जाकर जो लोगों की समस्या सुनते थे इससे कभी - कभी लोग उनसे मुलाकात से वंचित रह जाते थे। इसलिये लोगों ने सोचा कि उनके ठहरने के लिये एक खास स्थान में इनका निवास बनाया जाय जिससे हर समय हमारी बातों को सुनने के लिये वह उपलब्ध हो सकें। इसलिये एक खास स्थान में ऋषभ देव का निवास बनाकर उस स्थान का नाम विनीता नगरी रखा जो स्थान आज अयोध्या नगरी के नाम से परिचित है। आगे चलकर उनकी अनुगत जनता उनकी प्रजा कहलायी और उनका क्षेत्र उनका राज्य एवं उस क्षेत्र के वो राजा कहलाये।

जन्म लेने के पश्चात् ऋषभदेव ने मनुष्य जाति को अपने कल्याण के लिये कृषिकार्य, पशुपालन, वस्त्रवयन, धातुविद्या, शिल्पकला, चिकित्सा विद्या आदि सभी का ज्ञान तो दिया था मगर मनुष्यों के अन्दर प्रभु ने एक चीज की कमी महसूस की और वह था धर्म यानी अपने मनसे द्वेष, हिंसा आदि का त्याग। ऋषभदेव ने यह सोचा कि जबतक मनुष्य अपने अन्दर से हिंसा, द्वेष, लोभ, चोरी आदि पर विजय प्राप्त नहीं करता तब तक दुनिया को सच्चा सुख प्राप्त नहीं हो सकता। उन्होंने यह भी सोचा कि जब तक मैं इन पर खुद विजय प्राप्त नहीं कर लेता तब तक इसकी शिक्षा दूसरे को कैसे दूँ ? धर्म का आरम्भ दान तथा त्याग से होता है। अतः उन्होंने राजप्रासाद में दानशाला खोली और एक साल स्वर्ण मुद्रा आदि विभिन्न मूल्यवान वस्तुओं का दान किया। फिर अपने सौ लड़कों के बीच राज्य का बँटवारा कर गृहत्याग किया। साधारण जनता को

आध्यात्मिक ज्ञान देने के लिये नग्न मस्तक, नग्नपद, नग्नशरीर में ठण्ड तथा गरमी की परवाह न कर गांव - गांव, नगर -नगर में उपदेश देते हुए भ्रमण करने लगे। भूख प्यास की परवाह ऋषभदेव को नहीं थी। दिन में एक बार गोचरी (भोजन मांगने) के लिये निकलते थे। उसमें भोजन के अनुरूप भिक्षा मिलने से ही ग्रहण करते थे अन्यथा नहीं।

उपदेश देने के क्रममें विचरण करते - करते ऋषभदेव का आगमन हस्तिनापुर (वर्तमान दिल्ली) में हुआ। उस समय उन्होंने मौनव्रत धारण किया हुआ था तथा उनका वर्षीतप चल रहा था। उन्होंने अपने मनमें यह भी धारण कर लिया था कि पारणा ईख के रस से ही करेंगे नहीं तो नहीं। पारणा के लिये शहर में घूमते - घूमते उनका आगमन उनके पुत्र बाहुबली के पौत्र श्रेयांस कुमार के दरवाजे में हुआ। भगवान के आगमन का समाचार पाते ही मति, श्रृति ज्ञान द्वारा श्रेयांस कुमार को सभी पूर्व वृत्तान्त मालुम हो गया। श्रेयांसकुमार ने आकर भक्ति भाव से प्रभु से विनती की ईख रस द्वारा पारणा करने के लिये। भगवान ने एक मात्र पात्र के रूप में हाथ पसार कर अंजलि द्वारा ईख के रस का पारणा किया। वह दिन था अक्षय तृतीया। उस दिन प्रभु को पारणा करा कर श्रेयांस कुमार अक्षय पुण्य के भागी बने। तभी से वैशाख सुदी तृतीया को अक्षय तृतीया कहा जाता है। मौन व्रत की कठोर तपस्या के क्रम में प्रभु विनीता नगरी लौट आये और संकट मुख उद्यान में केवलज्ञान प्राप्त किये। केवलज्ञान प्राप्त के समाचार प्राप्त होने के साथ - साथ प्रभु की माताजी जो पुत्र विरह में रो-रो कर अंधी हो गयी थीं उन्हें लेकर भरत समवशरण (धर्म सभा) में पहुंचे। समवशरण सभामें पहुंचते ही माता मरुदेवी को दृष्टि शक्ति मिल गयी। समवशरण में पुत्र की ऋद्धि - सिद्धि देखकर आनन्द से वहीं पर उनको मोक्षप्राप्ति हो गयी। वर्तमान अवसर्पिणी में माता मरुदेवी ने ही पहले मोक्ष प्राप्ति की।

जैनधर्म तीर्थंकरों द्वारा उपदिष्ट धर्म है। धर्म (जैन) का यह काल-चक्र अनादि काल से चलता आ रहा है। जैन धर्म के इस अखंडित काल-चक्र को दो भाग में विभक्त किया गया है। एक भाग को अवसर्पिणी तथा दूसरे भाग को उपसर्पिणी काल कहा जाता है। अवसर्पिणी काल में

मनुष्य दुःख से सुख की ओर जाता है। ये गाड़ी के पहिये जैसा है। पहिये में जैसे आरा है उसी प्रकार कालचक्र में भी आरा माना जाता है। प्रत्येक आरा का नाम उनके गुण की दृष्टि से रखा गया है। प्रत्येक चक्रमें तीर्थंकर प्रगट होते हैं। आजकल अवसर्पिणीकाल का युग है। इसी चक्र के तीसरे आरे में प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव का आविर्भाव हुआ था। तीसरे आरे के समाप्त होने में जब ३ वर्ष ३ महीना १५ दिन बाकी था तब उनका निर्वाण हुआ। भगवान ऋषभदेव ही प्रथम महामानव थे जिन्होंने उच्च कोटि की सामाजिक व्यवस्थाएं स्थापित की। एक हजार वर्ष तक कठोर तपस्या कर उन्होंने पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया था।

उक्त समवशरण सभामें भगवान ऋषभदेव ने जीवन को पवित्र बनाने के लिये लोगों को उपदेश दिया। उनके उपदेश का मूल सिद्धान्त था - सत्य, अहिंसा, अस्तेय और अपरिग्रह। भगवान के उपदेश से प्रभावित होकर काफी संख्या में लोग उनके सिद्धान्तों को पालने लगे। अर्थात उनके धर्म के अनुयायी बने। जिन लोगों ने संसार त्यागकर (गृहत्याग) उनके धर्म को धारण किया वे लोग साधु - साध्वी कहलाये और जिन लोगों ने संसार (गृहस्थ) में ही रहकर उनके सिद्धान्तों का अनुपालन किया वे लोग श्रावक - श्राविका कहलाये। इस प्रकार से भगवान ऋषभदेव द्वारा साधु - साध्वी, श्रावक - श्राविका ये चार संघ प्रतिष्ठित हुए। भगवान ऋषभदेव द्वारा प्रतिष्ठित श्रावक - श्राविका संघ के सदस्य - सदस्या ही श्रावक कहलाये एवं उनके द्वारा प्रचारित पालनीय सिद्धान्त ही श्रावक धर्म कहलाया। उक्त चार संघों को चार तीर्थ भी कहा जाता था। इस तरह से इन तीर्थों के निर्माता भगवान ऋषभदेव ही थे। ऋषभदेव ही पहले समाज संस्कारक, पहले राजा, पहले कानून प्रणेता तथा पहले तीर्थंकर भी थे। सभी चीजों के अगुवा होने के कारण इन्हें ऋषभदेव के साथ - साथ आदिदेव भी कहा जाने लगा।

भगवान ऋषभदेव द्वारा प्रतिष्ठित श्रावक - श्राविका संघ में प्रवेश करने वाले श्रावकों का ही वंशज यह सराक जाति है। इन सराकों के पूर्वज श्रावक कहे जाते थे जो शब्द का अपभ्रंश रूप है सराक। देश के विभिन्न स्थानों के उच्चारण में अन्तर होने के कारण यह होता है। जैसेः-

मुंबई को लोग बम्बई कहते है, मद्रास को बंगलाभाषी लोग मान्द्राज कहते हैं। कलिकाता को अंग्रेज लोग केलकाटा कहते हैं। (Calcutta)।

ऋषभदेव भगवान द्वारा प्रतिष्ठित श्रावक शब्द का संस्कृत अर्थ है श्रवणकारी ।

श्रावक शब्द का व्युत्पतिगण अर्थ निम्नप्रकार हैः-

श्रा - श्रद्धावान

व - विवेकवान

क - क्रियावान

अर्थात श्रद्धा पूर्वक विवेकवान होकर जो व्यक्ति अपने कर्तव्यों का अनुपालन करते हैं अर्थात जो लोग भगवान ऋषभदेव के उपदेशों को मन, वचन, काया के द्वारा अनुपालन करते हैं वो ही श्रावक संघ के सदस्य या श्रावक कहलाते थे। आगे चलकर निवास स्थान परिवर्तन के कारण नये स्थान के आदिवासियों के उच्चारण में अन्तर आ जाने के कारण श्रावक शब्द का ही अप भ्रंश रूप सराक में परिणित हो गया। विद्वानों का भी यही मत है।

क्रमशः

मलयासुन्दरी चरित्र

पुर्वानुवृत्ति

महाबल - पिताजी ! मैं आपसे एक प्रार्थना करना चाहता हूँ और वह यह है कि जब मैं निद्रा में होता हूँ तब अदृश्य रूप से मेरे कमरे में आकर कोई हमेशा उपद्रव करता है। कभी वस्त्र, शस्त्र, कभी आभूषण या अन्य कोई उत्तम वस्तु जो मेरे पास होती है, उसे वह लेकर चला जाता है। कभी भयंकर अट्टहास कर वह मुझे डराने का प्रयत्न भी करता है। कल संध्या के समय माताजी ने वह लक्ष्मीपुंज हार रखने के लिये मुझे दिया था, परन्तु कल ही रात्रि को मेरे कमरे में से उस हार को किसी ने निकाल लिया। हार गायब हुआ जानकर माताजी को अत्यन्त दुःख हुआ, यह देखकर मेरा हृदय भी दुःख से व्याकुल हो रहा है। पिताजी! माता को शान्त करने के लिये मैंने उनके सामने यह प्रतिज्ञा रखी है कि यदि पांच दिन के अन्दर मैं उस हार को लाकर वापिस न दूं तो अग्नि प्रवेश कर मरणान्त प्रायश्चित करूंगा। माताजी ने प्रतिज्ञा की हैं अगर वह हार मुझे न मिला तो मैं भी अपने प्राण खो दूंगी। मेरी तमाम वस्तुओं को छिपकर हरण करने वाला जन्मान्तर का वैरी भूत या राक्षस होना चाहिये। पिताजी! मैं चाहता हूँ कि आज रात को दो तीन पहर तक अपने शयनगृह में हथियार सहित सावधान हो छिपकर पहरा दूं। यदि इतने समय तक मेरी तमाम वस्तुओं को चुराने वाला वह दुष्ट मेरे मकान में प्रवेश करे तो उसे पकड़ कर अपनी हार आदि तमाम वस्तुओं को वापिस ले लूं। उनमें से हार माताजी को देकर रात्रि के पिछले पहर में चंद्रावती की तरफ प्रयाण कर दूंगा। यह बात सुनकर राजा ने कुमार को वैसा ही करने की आज्ञा दी। पिता को नमस्कार कर महाबल अपने महल में चला गया।

ज्येष्ठबदी एकादशी के दिन अन्धेरी रात्रि ने पृथ्वी पर चारों तरफ

काली चादर बिछाई है। अनन्त आकाशमंडल में असंख्य तारे अपने मन्दप्रकाश द्वारा रात्रि की शोभा बढ़ा रहे हैं। तथापि विशेष अन्धकार के कारण उनके प्रकाश से जमीन पर रही हुई वस्तु स्पष्ट मालूम न होती थी। सारे शहर में शांति का सन्नाटा छा रहा था। राजमहल के चारों ओर किसी भी मनुष्य का संचार न था।

ऐसे समय में अपने निवासभवन में हाथ में तलवार लिये, दीपक के अन्धकार के नीचे सावधान हो गुप्तरीति से महाबल कुमार खड़ा है। अपने सोने के पलँग पर एक वस्त्र से मनुष्याकृति बना कर उस पर एक चादर डाली हुई है। उस निवास भवन में खिड़की के सिवाय तमाम द्वार बन्द हैं। चाहे जो हो परन्तु प्राण पण से भी आज उस दुष्ट को पूरी शिक्षा दूंगा, इसी विचार में कुमार सावधान होकर खड़ा है।

जब मध्यरात्रि का समय हुआ, उस वक्त खुली हुई खिड़की से एक हाथ ने अन्दर प्रवेश किया। कुमार ने भी उसे अच्छी तरह देख लिया और विशेष रूप से सावधान हो गया। वह हाथ कुमार के कमरे में फिरने लगा। यह देख कर कुमार आश्चर्य सहित विचारने लगा, अरे! शरीर के सिवाय सिर्फ हाथ क्यों दीख रहा है? कंकण आदि भूषणों से भूषित तथा सरल और कोमल होने के कारण यह हाथ किसी स्त्री का मालुम होता है । निश्चय यही स्त्री अदृश्य होकर मुझ पर निरंतर उपद्रव करती है। किसी दिव्य प्रभाव से इसका शरीर गुप्त मालुम होता है। अगर मैं खंड से इसके हाथ को काट डालूं तो फिर यह मेरे हाथ न आयेगी और ऐसा करने से लक्ष्मी पुंजहार आदि गई हुई वस्तुओं की भी प्राप्ति न होगी। इसलिये इस हाथ को न काट कर इसे पकड़ लेना चाहिये। यह विचार कर कुमार सहसा उस हाथ पर चढ़ बैठा और उसने उसे दोनों हाथों से जकड़ कर पकड़ लिया।

कुमार के इस साहस से अब वह हाथ कमरे में न रह कर खिड़की से बाहर हो आकाश मार्ग से ऊपर जाने लगा। कुमार भी उस हाथ पर निडरता से बैठा रहा। आकाश में जाने पर वायु वेग से हिलती हुई ध्वजा के समान वह हाथ काँपने लगा। उस हाथ ने कुमार को नीचे पटकने

के लिए बहुत ही प्रयत्न किये परन्तु वृक्ष की शाखा पर लटके हुए बन्दर के समान वह हाथ के साथ चिपटा रहा। कुछ उपाय के बाद उस व्यन्तर देवी का संपूर्ण शरीर कुमार को दीखने लगा। अब वह सोचने लगा यह सचमुच ही कोई देवी मालूम होती है इसे विशेष हैरान करने से कदाचित् यह कोपायमान हो मुझे फेंक देगी। इसलिये अधिक समय तक इस हाथ पर बैठे रहना मेरे लिए बड़ा खतरनाक है। यह विचार कर कुमार ने पृथ्वी की ओर उतरती हुई उस देवी की गर्दन पर इस प्रकार का मुष्टि प्रहार किया कि जिसकी पीड़ा से वह करूणस्वर से रूदन करती हुई बोली - हे साहसिक! कृपाकर मुझे छोड़ दो। मैं अब से आपको हैरान न करूंगी। इस समय देवी के आकाश मार्ग से पृथ्वी बहुत दूर नहीं थी, अतः कुमार ने करूणा से उसका हाथ छोड़ दिया। फिर न जाने वह देवी किस दिशा में गायब हो गई। देवी का हाथ छोड़ते ही निराधार होकर कुमार आकाश से नीचे गिर पड़े।

उसे पड़ते हीं मूर्छा आ गई। जंगल के शीतल पवन से आश्वासन मिलनें पर कुछ समय के बाद वह होश में आये। पुण्य के प्रताप से किसी घास के ढेर पर पड़ने के कारण कुमार के शरीर को विशेष चोट नहीं पहुँची थी, होश में आकर वह सोचने लगे। न जाने मैं इस समय किस प्रदेश में आकर पड़ा हूँ? इस अन्धकार पूर्ण रात्रि में जंगल में चारों तरफ सन्नाटा छाया हुआ है, कहीं - कहीं जंगली जानवरों के कर्ण कटु शब्द सुनाई दे रहे हैं। शेष रात्रि व्यतीत करने के लिए ऐसे बीहड़ जंगल में निःशस्त्र होकर जमीन पर बैठे रहना उचित नहीं है। यह सोचकर राजकुमार समीपवर्ती एक आम के पेड़ पर चढ़ बैठा। वह मन ही मन सोचने लगा। अहो! इस देवी के अपहरण से मेरी यह क्या अवस्था हुई? अब लक्ष्मीपुंज हार की प्राप्ति मुझे कैसे होगी? हार न मिलने पर माता के सामने की हुई प्रतिज्ञा का पालन किस तरह होगा? और वह न मिलने से माताजी कैसे जीवित रहेंगी। माता की मृत्यु से पिता के भी प्राणों की रक्षा होना असंभव है। हा! इस वक्त मेरे वंश के संहार का समय आ गया। हे विधि! तेरी विचित्र गति है! तू क्षण में मनुष्यों को रुलाता है, हँसाता

है, आशा देकर ऊँचे शिखर पर चढ़ाता है। थोड़े ही समय में फिर मनुष्यों को बंधन में डालता है और निराश कर के ऊँचे शिखर से नीचे पटकता है। तेरी विचित्रता को ज्ञानी महापुरुषों के सिवा और कोई नहीं जान सकता।

अब रात्रि का तीसरा पहर बीत चुका था। आकाश में तारे चमक रहे थे। चंद्रोदय का समय होने से अन्धकार भी कुछ कम हुआ था। इस समय आम के वृक्ष के नीचे पेट से घिसट कर चलने वाले किसी सर्प जैसे प्राणी की आहट उसके कानों में पड़ी। इससे कुमार ने सावधान होकर वृक्ष के नीचे की तरफ देखा तो आम के वृक्ष के नजदीक आता हुआ उसे एक भयानक अजगर दिखायी पड़ा। उस अजगर के मुंह में आधा सटका हुआ कोई मनुष्य मालुम होता था। यह देख कुमार समझ गया कि यह क्रूर जीव किसी मनुष्य को निगल कर इस वृक्ष के लपेटा देकर उसे मारने के लिए आ रहा है। यदि मैं इस क्रूर प्राणी के मुंह में पड़े हुए इस मनुष्य को जीवन दान दूं तो मेरा इस विपत्ति में आ पड़ना भी सफल गिना जा सकता है। इस नाशवन्त शरीर से दूसरे का कुछ उपकार हो सके तो जीवन सार्थक है, यह सोच कर कुमार वृक्ष से नीचे उतरा।

जिस वक्त वह अजगर उस वृक्ष के समीप आकर वृक्ष को लपेटा दे अर्ध सटके हुये मनुष्य को मार डालने का प्रयत्न करता था उसी वक्त कुमार ने अपने हाथों से उस भीमकाय अजगर के दोनों होठों को पकड़ कर उसे जीर्ण वस्त्र के समान चीर डाला। अजगर के दो भाग होते ही उसके मुँह से मंद चैतन्यवाली एक युवती स्त्री निकल पड़ी। यद्यपि वह स्त्री जीवित थी तथापि इस समय वह मूर्छा में होने से निश्चेष्ट मालूम होती थी। जंगल का शुद्ध पवन लगने से कुछ देर बाद अर्ध जागृत अवस्था में उसके मुख से मंद स्वर से मुझे महाबल कुमार का शरण हो यह शब्द निकल पड़े। अपना नाम सुन कर कुमार विस्मय प्राप्त कर सावधान हो उस युवती की तरफ देखने लगा।

क्रमशः

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Calcutta-700 001
Ph: (O) 220-8105/2139,Resi; 329-0629/0319

NAHAR
5/1, A.J.C. Bose Road, Calcutta-700 020
Ph: 247-6874,Resi: 244-3810

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
7, Camac Street, Calcutta - 700 017
Ph: 282-5234/0329

ARIHANT JEWELLERS
Mahendra Singh Nahata
57, Burtalla Street, Calcutta -700 007
Ph: 238-7015, 232-4087/4978

CREATIVE LIMITED
12, Dargah Road, Post Box: 16127, Cal-17
Ph: (033) 240-3758/1690/3450/0514
Fax: (033) 240 0098, 2471833

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
13/4 Karaya Road, Calcutta - 700 019
Ph: (O) 2208967, (R) 2471750

GAUTAM TRADING CORPORATION
32, Ezra Street, Calcutta - 700 001
6th Floor, Room No - 654
Ph: (O) 235 0623, (R) 239-6823

VEEKEY ELECTRONICS
36, Dhandevi Khanna Road
Calcutta - 700 054
Ph: 352-8940/334-4140 (R) 352-8387/9885

SUDERA ENTERPRISES PVT. LTD.
1, Shakespeare Sarani, Calcutta - 700 071
Ph: 282-7615/7617/2726
Gram: Sudera

N. K. JEWELLERS
Valuable Stones, Silver wares
Authorised Dealers: Titan, Timex & H.M.T.
2, Kali Krishna Tagore Street (Opp. Ganesh Talkies)
Calcutta - 700 007
Phone: 239 7607

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road, Calcutta - 700 007
Ph: 238-8677/1647, 239-6097

ELECTRO PLASTIC PRODUCTS (P) LTD.
22, Rabindra Sarani, Calcutta - 700 073
Ph: 236-3028, 237-4039

IN THE MEMORY OF LATE
JITENDRA SINGH NAHAR
Rabindra Singh Nahar
40/4A, Chakraberia South, Calcutta - 700 020
Ph: (O) 244-1309, (R) 475-7458

SURAJ MAL TATER
C/o Surajmal Chandmal
137, Bipin Behari Ganguli Street
Calcutta - 700 012
Ph: Shop -227-1857 (R) 238-0026

MUSICAL FILMS (P) LTD.
9A, Explanade East
Calcutta - 700 069

PANKAJ NAHATA
Oswal Manufacturers Pvt. Ltd.
Manufacturers & Suppliers of Garments & Hosiery Labels
4, Jagmohan Mallick Lane, Calcutta - 700 007
Ph: (O) 238-4755, (R) 238-0817

APRAJITA
Air Conditioned Market
Calcutta - 700 071
Ph: 282-4649, Resi: 247-2670

MANI DHARITAR UDYOG
Manufactureres of Flexible Ribbon,
Hookup, Main Cards, P. V. C. Insulated Wires and Cables.
JHANWAR LAL JAIN
96, Old Roshan Pura, Najaf Garh
New Delhi - 110043, Ph:(O) 5016527
(R) 545 3415, 542 3304
Mobile: 9811075330,

ASHOKE KUMAR RAIDANI
6, Temple Street, Calcutta
Ph: 237 4132/236 2072

B. W. M. INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi - 221401 (U.P.)
Ph: (O) 05414-25178,25778,25779
Fax: 05414-25378 (U. P.) 0151-61256 (Bikaner)

C. H. SPINNING & WEAVING MILLS PVT. LTD.
Bothra ka Chowk, Gangasahar, Bikaner

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue
Calcutta, Ph: 464-1186

BALURGHAT TRANSPORT LTD.
170/2/C, Acharya Jagadish Bose Road
Calcutta, Ph: 284-0612-15
2, Ram Lochan Mallick Street
Calcutta - 700 073

SURANA MOTORS PVT. LTD.
24A, Shakespeare Sarani
84 Parijat, 8th Floor, Calcutta - 700 071
Ph: 2477450/5264

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani
Calcutta - 700 007
Ph: Gaddy-233-1766/238-8846
Mobile: 98 3102 8566
Resi: 355-9641/7196

M/S. METROPOLITION BOOK COMPANY
93, Park Street, Calcutta - 700 016
Ph: 226-2418, Resi: 464-2783

APRAJITA BOYED
Suravee Business Services Pvt. Ltd.
9/10, Sitanath Bose Lane,
Salkia, Howrah - 711 106
Ph: 665-3666/2272
Email : Suravee @cal2. vsnl. net in
sona @ cal3. vsnl. net in

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Calcutta - 700 001
Ph: (B) 220-2074/8958 (D) 220-0983/3187
Cable: SWADHARMI, Fax: (033) 2209755
Resi: 464-3235/1541, Fax: (033) 4640547

GRAPHITE INDIA LIMITED
Pioneers in Carbon/Graphite Industry
31, Chowranghee Road, Calcutta - 700016
Ph: 2264943, 292194, Fax: (033) 2457390

GRAPHIC PRINT & PACK
13A, Dacars Lane (Ground Floor) Calcutta - 69
Ph: 248-1533,248-0046

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Calcutta - 700 071
Ph: 282-8181

SURENDRA SINGH BOYED
Sovna Apartment
15/1 Chakrabaria Lane
Calcutta - 700 026
Ph: 476-1533

MOTILAL BENGANI
CHARITABLE TRUST
12 India Exchange Place
Calcutta - 700 001, Ph: 220-9255

Dr. ANJULA BINAYIKA
M. D. DND, M. R. C. O. G. (London)
12, Prannath Pandit Street
Calcutta - 700 025, Ph: 474-8008

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
166, Jodhpur Park, Calcutta - 700068
Ph: 4720610

विशुद्ध केशर तथा मैसूर की सुगन्धित चन्दन की लकड़ी,
वरक एवं धूप के लिये पधारें
SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Calcutta - 700 007, Ph: 239-1408

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
203/1, M. G. Road, Calcutta - 700 007
Ph: (O) 238-9356/0950
(Fact). 557-1697/7059

BALCHAND SOHANLAL
5, Karbala Mohammed Street
Calcutta - 700 001, Ph: 2353902/2759
Fax: 033-2353902

SUNDERLAL DUGAR
R. D. B. Industries Ltd.
Regd. Off: Bikaner Building
8/1 Lal Bazaar Street, Calcutta - 700 001
Ph: 248-5146/6941/3350, Mobile: 9830032021
Office: Tobacco House
1/2, Old Court House Corner
Calcutta - 700 001, Ph: 220-2389/3570/3569

BHANWARLAL KARNAWAT
BEEKY TAI FEB UDYOG PVT. LTD.
City Centre, Room No. 534 & 535, 5th Floor
16, Synagauge Street, Calcutta - 700 001
Ph: 238-7281, 230-1739

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Calcutta - 700 001
Ph: (O) 348 8576/0669/1242
Resi: 225 5514, 237 8208, 229 1783

GYANI RAM HARAK CHAND SARAOGI
CHARITABLE TRUST
P-8 Kalakar Street, Calcutta - 700 007
Ph: 239 6205/9727

SATKAR CONSTRUCTION PVT. LTD.
Gujrat Mansion, 5th Floor
14, Bentick Street, Calcutta - 700 001
Ph: 248-4730/6256/9867, Direct: 248-6477/6169
Resi: 478-0765/458-3397, Mobile: 98300-30618
Fax: 248-6169

NAKODA METAL
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road
Calcutta - 700 001
Ph: 2352076, 2355701

DELUXE TRADING CORPORATION
Distinctive Printers
36, Indian Mirror Street
Calcutta - 700 013
Ph: 244-4436

R. K. KOTHARI
N. I. Corporation
Photographic, Heavy & Fine Chemicals
44c, Indian Mirror Street, Calcutta-700 013
Phone: 245-5763/64/65
D: 245-5766, Fax: 91-33-2446148

जो हिंसात्मक प्रवृति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं
WITH BEST WISHES

A. K. CHHAJER
Chhajer & Company
Chartered Accountants
230 A Masjid Moth
South Extension Part-II
New Delhi-110049

लाड़ा देवी ग्रन्थमाला
१२ सी, लार्ड सिन्हा रोड़
कलकत्ता - ७०० ००७

उद्देश्य

अप्रकाशित, प्राचीन, दुर्लभ, ज्ञानवर्धक एवं जनोपयोगी साहित्य प्रकाशन संवर्धन एवं संयोजन

ग्रन्थमाला से प्रकाशित पुस्तकें

श्रवण बेलगोल इतिहास के परिपेक्ष्य में
निर्माल्य ग्रहण पाप है
तीर्थ मान चित्र
भक्तामर स्तोत्र
जैन प्रश्नोत्तर माला
जैन पूजा पाठ चौबीसी पूजा संग्रह
अक्षय विधि व्रत कथा एवं पूजा
(सुहाग दशमी पूजा)
सरल जैन विवाह विधि
भव पार चलोगे
भक्तामर स्तोत्र पूजा सहित
दीपावली पूजन
तमिलनाडू के जैन तीर्थ
दिव्य ज्योति
जैन व्रत विधि एवं कथा
तत्वार्थ सूत्र
मुझे सुखी होना है
(चिन्तन के कुछ क्षण)-
पंच स्त्रोत
समाधि तंत्र

श्री राजकुमार अभिषेक कुमार सेठी
कलकत्ता

28 water supply schemes
315,000 metres of pipelines
110,000 kilowatts of puming stations
180,000 million litres of treated water
13,000 kilowatts of hydel power plants

(And in places where Columbus would have feared to tread)

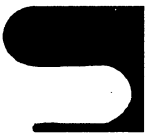

Subhash Projects and Marketing Limited

MAN IN PARTNERSHIP WITHNATURE

Head Office: 113 Park Street, 3rd floor, South Block, Calcutta 700016 Ph:(033)245 7562. Registered Office: Subhash House, F-27/2 Okhla Industrial area, Phase II New Delhi 110 020 Ph: (011) 692 7091-94, Fax (011)684 6003. Regional Office:8/2 Lisoor Road, Bangalore 560 042, Ph: (080)559 5508-15, Fax: (080) 559 5580.

Laying pipelines across one of the nation s driest regions, braving temparature of 50° C.

Executing the entire water intake and water carrier system including treatment and allied civil works for the mammoth Bakreshwar Thermal Power Project.

Bulling the water supply, fire fighting and effluent disposal system with deep pump houses in the waterlogged seashore of paradip

Creating the highest head-water supply scheme in a single pumping station in the world at Lunglei in Mizoram-at 880 metres, no less.

Building a floating pumping station on the fierce Brahmaputra.

Ascending 11,000 feet in snow laden Arunachal Pradesh to create an all powerful hydro-electric plant.

Delivering the impossible, on time and perfectly is the hallmark of Subhash Projects and Marketing Limited. Add to that our credo of when you dare, then alone you do. Resulting in a string of acheivements. Under the most arduous of conditions. Fulfilling the most unlikely of dreams.

Using the most advanced technology and equipment, we are known for our innovative solution. Coupled with the financial strength to back our guarantees.

Be it engineering design. Construction work or construction management. Be it environmental, infrastructural, civil and power projects. The truth is we design, build, operate and maintain with equal skill. Moreover, we follow the foolproof Engineering, Procurement and Construction System. Simply put, we are a single point responsibility. A one stop shop.

So, next time, somebody suggests that deserts by definition connote dryness, you recommend he visit us for a lesson in reality.

BOTHRA SHIPPING SERVICES

2, CLIVE GHAT STREET,
(N. C. DUTTA SARANI)
2ND FLOOR, ROOM NO. 10,
CALCUTTA - 700 001
Fax No. 220-6400
Phone: 220-7162
Email : sccbss @ cal2. vsnl. net in

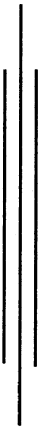

Steams Agents, Handling Agents,
Commission Agents & Transport Contractors

शास्त्र हिंसा एक से एक बढ़कर है।
किन्तु अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।
सारांश कि अहिंसा से बढ़कर कोई साधना नहीं है।

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED

Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Calcutta - 700 071

Gram "GANGJUTMIL"
Fax: + 91-33-245-7591
Telex: 021-2101 GANG IN

Phone: 226-0881
226-0883
226-6283
226-6953

Mill

BANSBERIA

Dist: HOOGHLY
Pin-712 502
Phone: 6346441/6446442
Fax: 6346287

भागवत पुराण के अनुसार
ऋषभदेव जैन धर्म के संस्थापक हैं।
Shri Radha Krishnan

HINDUSTAN GAS & INDUSTRIES LTD.
ESSEL MINING & INDUSTRIES LTD.
Registered Office
"Industry House"
10, Camac Street, Calcutta, 700 017
Telegram: 'Hindogen' Calcutta
Phone: (033) 242-8399/8330/5443

Manufacturers of
Engineers' Steel Files & Carbon Dioxide Gas
At Tangra (Calcutta)
Iron Ore and Manganese Ore Mines
In Orissa

S.G. Malleable & Heavy Duty Iron Castings
At Halol (Gujrat)
Ferro Vanadium and Ferro Molybdenum
At Vapi (Gujrat)
High Purity Nitrogen Gas
At Mangalore
H.D.P.E./P.P. Woven Sacks
At Jagdishpur (U.P.

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का है।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanksrit College, Calcutta

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.
(Formerly: Laxman Singh Jariwala)
Balwant Jain - Chairman

A - 42, Mayaputi, Phase-1, New Delhi-110064
Phone: 5144496,5131086,5132203
Fax: 91-011-5131184
E-mail: Laxman. jariwala @ gems. vsnl. net. in

"ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी।"

KUSUM CHANACHUR

Founder: Late Sikhar Chand Churoria

Our Quality Product of Chanachur.
Anusandhan, Raja,
Rimghim, Picnic,
Subham, Bhaonagari Ghantia.

Manufactured By
M/s. K. C. C. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P. O. Azimganj, Pin-742122
Dist: Murshidabad
Phone: Code: 03483 No. : 53232
Cal. Phone: No.: 033 2300432, 5213863

With Best Compliments.....

MARSON'S LTD

MARSON'S THE ONLY TRANSFORMER MANUFACTURER IN EASTERN INDIA EQUIPPED TO MANUFACTURE 132 KV CLASS TRANSFORMERS

Serving various SEB's Power station, Defence, Coal India, CESC, Railways, Projects Industries since 1957.

Transformers type tested both for Impulse/Short Circuit test for Proven desing time and again.

PRODUCT RANGE

Manufactures of Power and Distribution Transformer From 25 KVA to 50 MVA upto 132kv level.

Current Transformer upto 66kv.

Dry type Transformer.

Unit auxiliary and stations service Transformers.

18, PALACE COURT
1, KYD STREET, CALCUTTA - 700 016
PHONE: 229-7346/4553/226-3236/4482
CABLE-ELENREP TLX-0214366 MEL-IN
FAX-00-9133-225948/2263236

JAIN BHAWAN PUBLICATIONS

P-25 Kalakar Street, Calcutta - 700 007

English:

1.	Bhagavati-sutra-Taxt edited with English translation by K. C. Lalwani in 4 volumes:		
	Vol - 1 (satakas 1-2)	Price : Rs.	150.00
	Vol - 2 (satakas 3-6)		150.00
	Vol - 3 (satakas 7-8)		150.00
	Vol -4 (satakas 9-11)		150.00
2.	James Burges - The Temples of Satrunjaya. Jain Bhawan. Calcutta; 1977. pp. x+82 with 45 plates (It is the glorification of the sacred mountain Satrunaya.}	Price : Rs.	100.00
3.	P. C. Samsukha - Essence of Jainism translated by Ganesh Lalwani.	Price : Rs.	15.00
4.	Ganesh Lalwani - Thus Sayeth Our Lord,	Price : Rs.	15.00
5.	Lalwani and S.R. Benerjee - Weber's Sacred Literature of the Jains	Price : Rs.	100.00

Hindi

6.	Ganesh Lalwani - Atimukta (2nd edn) Translated by Shrimati Rajkumar Begani	Price Rs.	40.00
7.	Ganesh Lalwani - Sraman Samskriti ki Kavita. translated by Shrimati Rajkumari Begani	Price : Rs.	20.00
8.	Ganesh Lalwani - Nilanjana translated by Shrimati Rajkumari Begani	Price : Rs.	30.00
9.	Ganesh Lalwani - Candana-Murti translated by Shrimati Rajkumari Begani.	Price: Rs.	50.00
10.	Ganesh Lalwani-Vardhaman Mahavira	Price: Rs.	60.00
11.	Ganesh Lalwani-Barsat ki Ek Rat,	Price: Rs.	45.00
12.	Ganesh Lalwani Pancadasi.	Price: Rs.	100.00
13.	Rajkumari Begani-Yado ke Aine me.	Price: Rs.	30.00

Bengali:

14.	Ganesh Lalwani-Atimukta,	Price: Rs.	40.00
15.	Ganesh Lalwani-Sraman Samskrti Kavita.	Price:Rs.	20.00
16.	Puran Chand Shyamsukha-Bhagavan Mahavir O Jaina Dharma.	Price.Rs.	15.00
17.	Satya Ranjan Bandyopadhyay-Prasnottare Jaina-dharma	Price:Rs.	20.00

मानव जीवन नश्वर हैं उसमें भी आयु तो बहुत ही परिमित है

एकमात्र मोंक्ष मार्ग ही अविचल है यह जानकर

काम भोगो से निवृत हो जाना चाहिए।

*

G.C. Jain

A-40 N.D. S.E-11
New Delhi - 110049
Tel : 625-7095/0330

WB/RNP-45
Vol. XXIV No. 3 TITTHAYARA June 2000
Registered with the Registrar of Newspapers for India
under No. 30181/77

कोहो पीइं पणासेइ, माणी विणयनासणो।
माया मित्ताणि नासेइ, लोभो सव्वविणासणो।।

क्रोध प्रीति का नाश करता है,
मान विनय का नाश करता है,
माया मित्रता का नाश करती है,
और लोभ सभी सद्गुणों का नाश कर देता है।

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions
17/3 Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 666 7212/7225